भारत का प्राकृतिक विभाजन

भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जाता है –

(A) उत्तर का पर्वतीय भाग (हिमालय)
(B) उत्तर का विशाल मैदानी भाग (सिन्धु + गंगा + ब्रह्मपुत्र का मैदान)
(C) प्रायद्वीपीय पठारी भाग
(D) तटीय मैदानी भाग
(E) भारत के द्वीप समूह

(1) उत्तर का पर्वतीय भाग

→ भारत के उत्तर में विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत हिमालय है। इसका निर्माण 'गोंडवाना भूमि' के टूटने और उत्तर तथा पश्चिम की ओर खिसकने के कारण हुआ है।

→ हिमालय का निर्माण '7 करोड़ वर्ष पूर्व' टर्शियरी काल में हुआ है।

→ पर्वत निर्माण के आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार –
(A) भूपृष्ठ के नीचे दुर्बल मंडल में मैग्मा के ऊपर कुछ चट्टान/भूखंड तैर रहे हैं यही प्लेट कहलाते हैं।
(B) कुल प्लेटों कि संख्या – '6 दीर्घ प्लेट + 20 लघु प्लेट'
⇒ ये 6 दीर्घ प्लेट है – प्रशान्त प्लेट, अमेरिका प्लेट, अफ्रीका प्लेट, यूरेशियन प्लेट, भारतीय प्लेट (ऑस्ट्रेलियन प्लेट) तथा अण्टार्कटिका प्लेट

⇒ टर्शियरी काल में भारतीय प्लेट के उत्तर की ओर

रिक्सा को, यूरेशियन प्लेट से टकराने और टेथिस सागर में जमा अवसाद पर दबाव पड़ने से हिमालय का निर्माण हुआ।

(D) हिमालय का निर्माण तीन चरणों में हुआ :⇒

(A) प्रथम चरण - यह चरण 'आदि नूतन युग' में समाप्त हुआ। इस युग में 'अन्तर्जात बलों' के कारण केन्द्रीय हिमालय (Axis) ऊपर उठा

(B) द्वितीय चरण - मध्य नूतन युग → इस काल में पाकिस्तान में अवस्थित 'पोतवार बेसिन' में उत्थान पड़ा।

(C) तृतीय चरण → उत्तर "अतिनूतन युग"
इस काल में हिमालय का नवीनतम भाग 'शिवालिक श्रेणी' का निर्माण हुआ।

⇒ हिमालय को दिशा के अनुसार तीन भागों में बाँटा जाता है—

(A) पश्चिमी हिमालय - यहाँ की सबसे ऊँची चोटी → 'नंगा पर्वत'

(B) उत्तरी हिमालय - यहाँ की सर्वोच्च चोटी 'माउण्ट एवरेस्ट'

(C) पूर्वी हिमालय - सबसे बड़ी चोटी 'नामचाबरुआ पर्वत'

⇒ हिमालय की लम्बाई - 2400 km
* पश्चिम में सिन्धु गार्ज से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र गार्ज तक

⇒ हिमालय की अधिकतम चौड़ाई - 500 km
* कश्मीर में
* न्यूनतम चौड़ाई - 200 km / अरुणाचल प्रदेश

⇒ हिमालय का क्षेत्रफल - 5 लाख वर्ग km

⇒ हिमालय के उत्तर में तिब्बत के पठार का सर्वोच्च भाग पामीर है इसे कहा जाता है - दुनिया का छत The Roof of the world.

* 'पामीर', हिमालय और मध्य एशिया कि श्रेणी को जोड़ता है

⇒ हिमालय की दक्षिणी सीमा पर -- शिवालिक मैदानी भाग का तलिहदीय क्षेत्र। MSL से 300 मीटर की ऊँचाई वाला भूभाग 'हिमालय और पर्वतपदीय प्रदेश को अलग करता है

→ चूँकि भारतीय प्लेट "उत्तर पूर्व" की ओर अभी भी गतिशील है अतः हिमालय की ऊँचाई लगातार बढ़ रही है।

* भारत उत्तर की ओर बढ़ रहा है — 5 cm प्रतिवर्ष

⇒ हिमालय की उत्थान की प्रक्रिया अभितक जारी है 'गॉडविन ऑस्टिन' के अनुसार 1 मिलियन वर्ष पूर्व हिमालय की औसत ऊँचाई - 2440 मीटर

3500 मीटर * हिमालय की वर्तमान औसत ऊँचाई — 3050 m है

→ हिमालय की वृद्धि दर — 5-10 cm प्रतिवर्ष

→ हिमालय में सर्वाधिक वृद्धि दर — 'महाभारत श्रेणी' में

→ हिमालय क्षेत्र में बार-बार भूकम्प आने का अर्थ है कि अभितक हिमालय में Isostatic Equilibrium (समस्थैतिक संतुलन) स्थापित नहीं हुआ है और इसकी ऊँचाई बढ़ रही।

⇒ हिमालय की तीनों श्रेणी का निर्माण अलग-2 काल में पूरा हुआ।

(A) महान हिमालय → का निर्माण 120 से 70 मिलियन वर्ष

(B) मध्य (लघु) हिमालय — निर्माण - 30-25 मिलियन वर्ष पूर्व

(C) शिवालिक श्रेणी निर्माण - 20-10 मिलियन वर्ष पूर्व

⇒ हिमालय के उत्तर में इससे भी प्राचीन पर्वत श्रेणी है जो कहलाते हैं - 'ट्रांस हिमालय'

* ट्रान्स हिमालय ⇒ वे पर्वत श्रेणी जो हिमालय से भी प्राचीन है हिमालय के उत्तर में अवस्थित है, कहलाते हैं - ट्रान्स हिमालय

⇒ चूँकि ये पर्वत श्रेणी तिब्बत के पठार के पश्चिमी भाग में पड़े हैं अतः कहलाता है — तिब्बत हिमालय